ले मशालें चल पड़े हैं...

बल्लीसिंह चीमा

ले मशालें चल पड़े हैं लोग मेरे गाँव के
अब अँधेरा जीत लेंगे लोग मेरे गाँव के
पूछती है झोपड़ी और पूछते हैं खेत भी
कब तलक लुटते रहेंगे लोग मेरे गाँव के
बिन लड़े कुछ भी नहीं मिलता यहाँ ये जानकर
अब लड़ाई लड़ रहे हैं लोग मेरे गाँव के
चीखती है हर रुकावट ठोकरों की मार से
बेड़ियाँ खनका रहे हैं लोग मेरे गाँव के
लाल सूरज अब उगेगा देश के हर गाँव में
अब इकट्ठे हो चले हैं लोग मेरे गाँव के

(ले "मशालें चल पड़े हैं" कविता के कुछ पद)

रमाकान्त अग्निहोत्री

ले मशालें चल पड़े हैं लोग मेरे गाँव के
अब अँधेरा जीत लेंगे लोग मेरे गाँव के

क्या खूब गाना है! मन होता है कि हम भी एक मशाल उठाएँ और निकल पड़ें सड़कों पर। अन्याय का सामना करने। तुम्हें मालूम है यह कविता किसने लिखी है? इसी पन्ने में कविता और कवि का नाम दोनों हैं। ऐसी कौन-सी बात है जो इस कविता को महान बनाती है? ध्यान से देखो तो पता लगेगा कि पूरी कविता में एक भी शब्द ऐसा नहीं जो आम रोज़मर्रा की भाषा का हिस्सा न हो। क्या इसमें कोई ऐसा शब्द है जो तुमने पहले न सुना हो? वाक्य रचना देखो। साधारण गद्य की भाषा में:

मेरे गाँव के लोग मशालें ले चल पड़े हैं

मेरे गाँव के लोग अब अँधेरा जीत लेंगे

शब्दों के क्रम में हल्के-से फेरबदल ने जैसे जादू कर दिया है!

"मेरे गाँव के लोग"

"लोग मेरे गाँव के" बन गया और

"मशालें ले चल पड़े हैं"

"ले मशालें चल पड़े हैं" बन गया।

ऐसा तो कभी नहीं होता कि कवि पहले गद्य में लिखे और फिर उसमें कुछ फेरबदल कर कविता बना दे। ऐसी कविता तो सचमुच बहुत उबाऊ होगी। कविता में भाव, ध्वनि, शब्द, लय और पद्य संरचना सब एक साथ आते हैं। कवि ने ऐसा तो नहीं सोचा होगा कि कविता में "ऐ" की स्वर ध्वनि बार-बार आएगी। पर ऐसा हो गया स्वाभाविक रूप से। और उसका असर तो देखो ज़रा!

और कुछ तुम्हारी माथापच्ची के लिए

मशाल का बहुवचन तो मशालें हो गया, पर लोग का लोग ही रहा। यह क्या माजरा है छोटे मियाँ! कभी कुछ लिखा भी तो करो। तुम्हारी चिट्ठियों का बहुत इन्तज़ार रहता है...!